Aatmanushasan

Folder No.	022323
Granth Name	Aatmanushasan
Author	Bansidhar Shastri
Publisher	Jain Granth Ratnakar Karyalay
Edition	1
Year	1916
Pages	278

आत्मानुशासन

फोल्डर नं.	०२२३२३
ग्रन्थ	आत्मानुशासन
लेखक	बंसीधर शास्त्री
प्रकाशक	जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९१६
पृष्ठ	२७८

मुख्य टाइटल
प्रस्तावना ---------- ३
विषय सूची---------- १४
शुद्धिपत्र ---------- १९
श्लोकों की वर्णानुक्रम सूची ---------- २०
मंगलाचरण ---------- १
उपदेशक का स्वरूप ---------- २
प्रथम आराधना ---------- ९
सम्यग्दर्शन का लक्षण ---------- ९
सम्यग्दर्शन के भेद ---------- १०
सम्यग्दर्शनकी महिमा---------- १२
द्वितीय आराधना ---------- १३
चारित्रका प्रथम स्वरूप ---------- १३
कर्मनिरपेक्ष पौरुषकी निंदा ---------- २३
कर्माधीन सुखकी सोदाहरण निंदा ---------- ३४
विषयोकी प्राप्ति में भी दुःख ---------- ४४
क्षणिक शरीरादिसे राग न होना चाहिये ---------- ५६
स्त्रीप्रेम की निन्दा ---------- ६५
तीनो पनका स्वरूप---------- ७५
सर्वोत्कृष्ट वैराग्यका स्वरूप ---------- ८८
तृतीय तप आराधना ---------- १०१
तप प्रकार व सुगमता ---------- १०३
तीर्थंकरके उदाहरणसे तपकी श्रेष्ठथा ---------- ११६
चौथी ज्ञान आराधना ---------- १२०

ज्ञानवृद्धिका क्रम ---------- १२१
स्त्री की सरोवर के तुल्य भीषणता ---------- १३०
तपकी राज्यसे अधिक श्रेष्ठता ---------- १४१
कलियुगमें धर्म की दुःसाध्यता ---------- १५१
साधुओंको याचना न करनेका उपदेश ---------- १६४
ज्ञानमेंसे रागद्वेष हटानेका उपदेश ---------- १८१
शरीर व स्त्रीके प्रेमकी निंदा ---------- १९५
कषायकी सूक्ष्म सत्ताका स्वरूप ---------- २०८
वीतरागताकी भावना ---------- २२३
ध्यान का वास्तविक फल ---------- २४१
अन्त्य मङ्गल ---------- २४७